❍ 22 / 09 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5∗4=20)

➢➢ ∗किसी भी बता में संशय तो नहीं आया ?∗

➢➢ ∗बाप और वर्से को याद किया ?∗

➢➢ ∗बाप की छत्रछाया के नीचे रह माया की छाया से बचकर रहे ?∗

➢➢ ∗मास्टर मुरलीधर बनकर रहे ?∗

────────────────────────

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ ∗अव्यक्त पालना का रिटर्न∗ ☆

❂ ∗तपस्वी जीवन∗ ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ ∗सारे दिन में बीच-बीच में एक सेकण्ड भी मिले, तो बार-बार यह विदेही बनने का अभ्यास करते रहो। दो चार सेकण्ड भी निकालो इससे बहुत मदद मिलेगी। नहीं तो सारा दिन बुद्धि चलती रहती है,∗ तो विदेही बनने में टाइम लग जाता है और अभ्यास होगा तो जब चाहे उसी समय विदेही हो जायेंगे ∗क्योंकि अन्त में सब अचानक होना है। तो अचानक के पेपर में यह विदेही पन का अभ्यास बहुत आवश्यक है।∗

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

———————————————

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

✺ *"मैं कल्प-कल्प की विजयी आत्मा हूँ"*

〰✧ जो अनेक बार विजयी आत्मायें हैं, उन्हों की निशानी क्या होगी? उन्हें हर बात बहुत सहज और हल्की अनुभव होगी। *जो कल्प-कल्प की विजयी आत्मायें नहीं उन्हें छोटा-सा कार्य भी मुश्किल अनुभव होगा। सहज नहीं लगेगा।*

〰✧ *हर कार्य करने के पहले स्वयं को ऐसे अनुभव करेंगे जैसे यह कार्य हुआ ही पड़ा है। होगा या नहीं होगा यह क्वेश्चन नहीं उठेगा। हुआ ही पड़ा है यह महसूसता सदा रहेगी। पता है सदा सफलता है ही, विजय है ही - ऐसे निश्चयबुद्धि होंगे।*

〰✧ *कोई भी बात नई नहीं लगेगी, बहुत पुरानी बात है। इसी स्मृति से स्वयं को आगे बढ़ाते रहेंगे।*

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

〰✧ कोई भी संकल्प न आये, *फुलस्टॉप कहा और स्थित हो गये।* क्योंकि लास्ट पेपर अचानक आना है। अचानक के कारण ही तो नम्बर बनेंगे ना। लेकिन होना एक सेकण्ड में हैं। तो कितना अभ्यास चाहिए?

〰✧ अगर अभी से नष्टोमोहा हैं, मेरा-मेरा समाप्त है तो फिर मुश्किल नहीं है, सहज है। तो सभी पास होने वाले हो ना। *जो निश्चय बुद्धि हैं उनकी बुद्धि में यह निश्चत रहता है कि मैं विजयी बना था, बनेंगे और सदा ही बनेंगे।* बनेंगे या नहीं बनेंगे, यह क्वेचन नहीं होता है।

〰✧ तो ऐसे बुद्धि में निश्चत है कि हम ही विजयी है? लेकिन वहुतकाल का अभ्यास जरूर चाहिए। अगर उस समय कोशिश करेंगे, बहुतकाल का अभ्यास नहीं होगा तो मुश्किल हो जायेगा। *बहुत काल का अभ्यास अंत में मदद देगा।* अच्छा

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

∫∫ 4 ∫∫ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

———————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *पुरुषार्थ भी रमणीक करो।* कई याद में बैठते हैं सोचते हैं 'मैं ज्योति बिन्दु, मैं ज्योति बिन्दु' और ज्योति टिकती नहीं, शरीर भूलता नहीं। ज्योति बिन्दु तो हैं ही लेकिन कौन-सी ज्योति बिन्दु हैं। *हर रोज़ अपना नया नया टाइटल याद रखो कि ज्योति बिन्दु भी कौन सी है? रोज़ सर्वप्राप्तियो में से कोई-न-कोई प्राप्ति को याद करो।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- चलते फिरते, कर्म करते, सच्ची कमाई कर, बाप की याद में रहना"*

➳ _ ➳ मीठे बाबा ने जब से जीवन में पर्दापण किया है... जीवन खुशियो के फूलो से महक उठा है... हर पल, हर कर्म मीठे बाबा की यादो से सजा धजा है... *मूर्तियो और मन्दिरो में मात्र दर्शन की प्यासी मै आत्मा... यूँ भगवान को

जानूंगी, खुद को पहचानुगी यह तो कल्पनाओ में भी न था..*. आज मीठे बाबा को पाकर, सच की अमीरी से जीवन छलक रहा है... *खुद को जानने की और ईश्वर को पाने की ख़ुशी ने जीवन को बेशकीमती बना दिया है.*. मै आत्मा ईश्वरीय यादो से भरपूर होकर मा दाता बनकर मुस्करा हूँ... और यूँ मीठे चिंतन में डूबी हुई मै आत्मा... मीठे बाबा को हाले दिल सुनाने, सूक्ष्म वतन में उड़ चलती हूँ...

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को सच्ची कमाई के गहरे राज समझाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... *ईश्वर पिता के साथ भरा यह वरदानी समय... बहुत कीमती है, इसे अब यूँ ही व्यर्थ में न गंवाओ.*.. चलते फिरते हर कर्म को, ईश्वर पिता की यादो में कर, सच्ची कमाई से सम्पन्न हो, देवताई सुखो में मुस्कराओ... हर साँस से मीठे बाबा को याद कर, समर्थ चिंतन से देवताई अमीरी को पाओ..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा प्यारे बाबा की सारी जागीरों पर अपना अधिकार करते हुए कहती हूँ :-* "मीठे मीठे बाबा मेरे... *आपने अपना यादो भरा हाथ, मेरे हाथो में देकर, मुझे देवताओ की अमीरी से पुनः नवाजा है.*.. आपको पाकर मै आत्मा... अपने सारे खोये खजाने लेकर... विश्व का ताजोतख्त पा रही हूँ... सच्ची कमाई से भरपूर होकर फिर से खोयी हुई बादशाही को पा रही हूँ..."

❉ *प्यारे बाबा ने मुझ आत्मा को मेरे खोये सतयुगी सुखो को पुनः दिलाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... *भाग्य ने जो खुबसूरत दिन दिखलाया है... और भगवान को पिता, टीचर, सतगुरु रूप में सम्मूख मिलवाया है.*.. अब हर पल इन मीठी यादो में खोकर, सच्ची कमाई करो... ईश्वर पिता की याद में हर साँस को पिरो दो...और 21 जनमो के लिए मालामाल हो जाओ..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा की सारी वसीयत की मालिक बनते हुए कहती हूँ :-* " प्यारे प्यारे बाबा मेरे...मै आत्मा *ज्ञान धन से सम्पन्न होकर, यादो के झूले में खोयी हुई, हर क्षण सच्चे आनन्द को जी रही हूँ.*.. आपकी

मीठी यादो में जीवन कितना प्यारा मीठा और सच्ची कमाई से भरपूर हो रहा है,... सदा आपके प्यार की छत्रछाया में पलने वाली महान भाग्यवान ही गयी हूँ..."

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को अपनी मीठी यादो के तारो में पिरोते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे सिकीलधे बच्चे... संगम के सुहावने पलों में, मीठे बाबा की यादो में, सदा के धनवान् बन जाओ... *हर कर्म करते हुए मन और बुद्धि के तारो से मीठे बाबा को थामे रहो..*. सदा प्यारे बाबा के साथ रहो... और एक पल भी खुद को ईश्वरीय याद से जुदा नही करो... यादो की सच्ची कमाई से देवताई सम्पन्नता से भरपूर हो जाओ..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा से अखूट खजाने लेकर सरे विश्व की मालिक बनकर कहती हूँ :-* "मीठे प्यारे बाबा मेरे... आपने मुझ आत्मा के साधारण जीवन में आकर, जीवन को बेशकीमती बना दिया है... *सदा की गरीबी से छुड़ाकर, मुझ आत्मा को देवताई सुखो भरा ताज पहनाकर, राजरानी बनाया है.*.. मै आत्मा ईश्वरीय यादो में अथाह खुशियो को अपनी बाँहों में भर रही हूँ..."मीठे बाबा से प्यारी सी रुहरिहानं कर मै आत्मा... स्थूल तन में लौट आयी...

———————————————

∫∫ 7 ∫∫ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- एक बाप से ही सुनना है, बाकी जो पढ़ा है वह सब भूल जाना है*"

➳ _ ➳ अपने शिव पिता परमात्मा, टीचर बाप से मधुर महावाक्य सुनने के लिए मैं मन, बुद्धि के विमान पर बैठ पहुँच जाती हूँ अपने शिव पिता परमात्मा की अवतरण भूमि मधुबन में। जहां स्वयं भगवान टीचर बन अपने

बच्चों को पढ़ाने के लिए आते हैं। *मधुबन के डायमण्ड हाल में मैं देख रही हूँ सभी ब्राह्मण आत्मायें गॉडली स्टूडेंट स्वरूप में स्थित है और अपने टीचर शिव पिता परमात्मा का आह्वान कर रही हैं*। अपने गॉडली स्टूडेंट स्वरूप में स्थित हो कर मैं भी क्लास में आ कर बैठ जाती हूँ और अपने परम शिक्षक शिव बाबा का आह्वान करती हूँ।

➳ _ ➳ अपने बच्चों का निमंत्रण मिलते ही शिव बाबा परमधाम से नीचे आ जाते हैं और सूक्ष्म लोक में पहुँच, ब्रह्मा बाबा की भृकुटि में बैठ सेकेंड में हम बच्चों के सामने उपस्थित हो जाते हैं। *अब मैं देख रही हूँ अपने सामने संदली पर अपने परमशिक्षक शिव बाबा को उनके लाइट माइट स्वरूप में। शिक्षक के रूप में बापदादा का स्वरूप अति लुभावना लग रहा है*। बापदादा की लाइट माइट चारों और फैल कर क्लासरूम के वातावरण को दिव्य और अलौकिक बना रही है। वायुमण्डल में फैली दिव्य अलौकिक आभा बुद्धि को एकाग्र कर रही है।

➳ _ ➳ सभी एकाग्रचित हो कर, एकटक बाबा को निहारते हुए, ब्रह्मा मुख से उच्चारित बाबा के एक - एक महावाक्य को ध्यान से सुन रहे हैं। *सभी की बुद्धि रूपी झोली को अविनाशी ज्ञान रत्नों से भरपूर करके अब बापदादा वापिस अपने धाम लौट रहे हैं*। अपने गॉडली स्टूडेंट स्वरूप में स्थित, मन ही मन अपने सर्वश्रेष्ठ भाग्य पर नाज़ करती हुई अब मैं विचार करती हूँ कि विनाशी शास्त्रों के ज्ञान से सम्पन्न आत्मा को भी अपने ज्ञान का कितना नशा होता है। किन्तु *यहां तो स्वयं भगवान अविनाशी ज्ञान रत्नों से मुझे भरपूर कर रहें है*।

➳ _ ➳ कितनी पदमापदम सौभाग्यशाली हूँ मैं आत्मा जो स्वयं भगवान टीचर बन मुझे पढ़ाने के लिए आते हैं, यह स्मृति मुझे असीम रूहानी नशे से भरपूर कर रही है। मैं सहज ही अपने लाइट माइट स्वरूप में स्थित हो रही है। अपने लाइट के फ़रिशता स्वरूप को धारण कर अब मैं सूक्ष्म लोक की ओर जा रही हूँ। *पाँच तत्वों की बनी साकारी दुनिया को पार कर मैं पहुँच गई सफेद प्रकाश की इस सुंदर दुनिया मे जहां मेरे सामने मेरे परम शिक्षक शिव बाबा

ब्रह्मा बाबा के लाइट के आकारी शरीर मे विराजमान है*। अपनी बाहें फैलाये वो मुझे अपने पास बुला रहें हैं। उनकी बाहों में समाकर मैं स्वयं को उनके प्यार से भरपूर कर रही हूँ।

➳ _ ➳ उनके वरदानी हाथ मेरे सिर के ऊपर हैं और उनके हस्तों से निकल रही शक्तियां मुझ आत्मा में समाकर मेरी बुद्धि को स्वच्छ और निर्मल बना रही हैं। *बुद्धि रूपी बर्तन को शुद्ध और निर्मल बना कर अब बापदादा टीचर बन अविनाशी ज्ञान रत्नों के अथाह खजानों से मेरे इस बुद्धि रूपी बर्तन को भर रहें हैं*। अविनाशी ज्ञान के अखुट खजाने ले कर अब मैं फ़रिशता वापिस पांच तत्वों की बनी साकारी दुनिया में लौट रहा हूँ और अपने सूक्ष्म शरीर के साथ अपने साकारी शरीर मे प्रवेश कर रहा हूँ।

➳ _ ➳ अब मैं अपने ब्राह्मण स्वरूप में स्थित हूँ और अपने परमशिक्षक शिव पिता के महावाक्यों को सदा स्मृति में रख, उनके द्वारा मिले अविनाशी ज्ञान को जीवन मे धारण कर अपने जीवन को ऊंच और महान बना रही हूँ। मेरे टीचर शिव बाबा द्वारा मिला सत्य ज्ञान अब मेरी बुद्धि में टपकता रहता है। *शास्त्रों का ज्ञान जो अब तक पढ़ा और सुना था वह सब कुछ भूल, एक बाप से ही सुनते और उसे अपने जीवन मे धारण करते हुए अब मैं अपने जीवन को पूजनीय और महिमा लायक बना रही हूँ*।

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं बाप की छत्रछाया के नीचे रह माया की छाया से बचने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं सदा खुश और बेफिक्र आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा मुरली से बहुत प्यार करती हूँ ।*
✺ *मैं मास्टर मुरलीधर हूँ ।*
✺ *मैं संगमयुगी ब्राह्मण आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∫∫ 10 ∫∫ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ *देखा गया है कि क्रोध की सबजेक्ट में बहुत कम पास हैं। ऐसे समझते हैं कि शायद क्रोध कोई विकार नहीं है, यह शस्त्र है, विकार नहीं है*। लेकिन क्रोध ज्ञानी तू आत्मा के लिए महाशत्रु है। क्योंकि क्रोध अनेक आत्माओं के सम्बन्ध, सम्पर्क में आने से प्रसिद्ध हो जाता है और *क्रोध को देख करके बाप के नाम की बहुत ग्लानी होती है*। कहने वाले यही कहते हैं, देख लिया ज्ञानी तू आत्मा बच्चों को। *क्रोध के बहुत रूप हैं। एक तो महान रूप आप अच्छी तरह से जानते हो, दिखाई देता है - यह क्रोध कर रहा है।*

➳ ➳ *दसरा - क्रोध का सूक्ष्म स्वरूप अन्दर में ईर्ष्या, द्वेष, घृणा होती

है। इस स्वरूप में जोर से बोलना या बाहर से कोई रूप नहीं दिखाई देता है,* लेकिन जैसे बाहर क्रोध होता है तो क्रोध अग्नि रूप है ना, वह अन्दर खुद भी जलता रहता है और दूसरे को भी जलाता है। ऐसे *ईर्ष्या, द्वेष, घृणा - यह जिसमे है, वह इस अग्नि में अन्दर ही अन्दर जलता रहता है*। बाहर से लाल, पीला नहीं होता, लाल पीला फिर भी ठीक है लेकिन वह काला होता है।

➳ _ ➳ *तीसरा क्रोध की चतुराई का रूप भी है*। वह क्या है? *कहने में समझने में ऐसे समझते हैं वा कहते हैं कि कहाँ-कहाँ सीरियस होना ही पड़ता है। कहाँ-कहाँ ला उठाना ही पड़ता है - कल्याण के लिए।* अभी कल्याण है या नहीं वह अपने से पूछो। *बापदादा ने किसी को भी अपने हाथ में ला उठाने की छुट्टी नहीं दी है*। क्या कोई मुरली में कहा है कि भले लाॅ उठाओ, क्रोध नहीं करो? लाॅ उठाने वाले के अन्दर का रूप वही क्रोध का अंश होता है। जो निमित्त आत्मायें हैं वह भी ला उठाते नहीं हैं, लेकिन उन्हों को लाॅ रिवाइज कराना पड़ता है। लाॅ कोई भी नहीं उठा सकता लेकिन निमित्त हैं तो बाप द्वारा बनाये हुए ला को रिवाइज करना पड़ता है। निमित्त बनने वालों को इतनी छुट्टी है, सबको नहीं।

✺ *ड्रिल :- "क्रोध के बहुरूपों को पहचान क्रोध की सब्जेक्ट में पास होने का अनुभव"*

➳ _ ➳ *मन रूपी आकाश में बिखरे संकल्प रूपी बादल... कुछ श्वेत कुछ श्याम, और कुछ सबसे अलग अँगारों के समान, गहरे लाल रंग के... जैसे किसी ज्वाला मुखी से बिखरा लावा...* एक एक संकल्प को साक्षी भाव से देखते हुए... मैं आत्मा बैठ गयी हूँ बापदादा की कुटिया में, और अब एक एक कर शान्त होते मेरे ये संकल्प... मन बिल्कुल स्वच्छ, शान्त, होता जा रहा है... बापदादा के चित्र से आती प्रकाश की किरणें... मेरी भृकुटी पर स्थित होकर... आहिस्ता आहिस्ता मेरे मस्तिष्क में प्रवेश कर रही है... और इस प्रकाश की धारा से जगमगाता मेरा सम्पूर्ण अस्तित्व...

➳ _ ➳ मैं आत्मा फरिश्ता रूप में बापदादा के साथ हिस्ट्री हॉल में... बापदादा आज बच्चों को उनके अलौकिक जन्मदिन की बधाई दे रहे है... एक एक करके... बारी-बारी से सबको... मेरा नम्बर सबसे आगे... मगर बापदादा मुझे इशारे से पीछे होने का संकेत करते हुए... एक एक आत्मा को वरदान और पावर फुल दृष्टि, साथ बेशकीमती सौगातें... और मैं एक एक कर अपने सामने से उमंगों से भरपूर होकर जाती एक एक आत्मा को देख रहा हूँ... लम्बे इन्तजार के बाद मेरा नम्बर आता है... और बापदादा मेरी उपेक्षा कर चले जाते है हिस्ट्री हॉल से... मैं बैठकर सोच रहा हूँ इस उपेक्षा का कारण... और *एक एक आत्मा के प्रति ईर्ष्या से भरता जा रहा हूँ मैं... अन्दर ही अन्दर एक बेचैनी और घुटन... एक बेबसी की भावना... क्योंकि मुझे बाहर से शान्त भी दिखना है...* एक अन्तहीन सा संघर्ष... जिसकी पीडा मैं ही जानता हूँ... तभी कन्धे पर किसी का प्यार भरा स्पर्श... और जैसे किसी ने कोई पीडानाशक घोल पिला दिया हो... और सारी कटुता सारी ईर्ष्या बह गयी है आँखो से आसुँओं की धारा बनकर...

➳ _ ➳ मैं अब बापदादा के साथ एक अनोखी यात्रा पर... मैं और बाबा एक ऊँची पहाडी पर... दूर कहीं फटता ज्वालामुखी और बहकर आता हुआ उसका गहरा लाल लावा... बेहद डरावना और जलाने वाला... मैं देख रहा हूँ बाबा के मनोभावों को और समझने की कोशिश कर रहा हूँ... हिस्ट्री हॉल का उनका व्यवहार और अब ये ज्वाला मुखी... और सहसा समझ में आ रहा है मुझे सब कुछ... *क्रोध का भीषण रूप ठीक इस ज्वालामुखी की तरह से जलाने वाला... और सूक्ष्म रूप ईर्ष्या...* सोचकर खुद से ही नजरें चुरा रहा हूँ मैं और बाबा रहस्यपूर्ण नजरों से देखे जा रहें है मुझे... मगर मैं नजरें उठाने की हिम्मत नही जुटा पा रहा अब... और तभी बापदादा मेरा हाथ पकड कर एक झील के पास ले जाते हुए... मुझे झील के पानी में पैर उतारने का आह्वान करते हुए... और मैं देख रहा हूँ पानी से उठता धुआँ... गरम खौलता झील का पानी... कुछ ही पल में समझ रहा हूँ क्रोध के तीसरे रूप को... शीतलता का प्रतीक झील का पानी, मगर आज ये गरम और खौलता हुआ... *ठीक वैसे ही जैसे निमित्त बनी आत्मा लॉ को हाथ में उठाये और कल्याण के नाम पर क्रोध को करें*...

➳ _ ➳ क्रोध के विभिन्न रूपों की पहचान कर मैं क्रोध मुक्त बनने के लिए बैठ गया हूँ... शान्त पहाडी झरने के नीचे... झरने के ऊपर बापदादा... मुझ आत्मा से क्रोध के अंश मात्र को धोते हुए... और निर्मल और शान्त होती हुई मैं आत्मा... *बिन्दु बन परमधाम की ओर जाती हुई मैं आत्मा... और अन्य आत्माओं को मुझसे आगे निकलने का आह्वान करते बापदादा... मगर मैं शान्त और यथा स्थिति में... न कोई संकल्प और न ही हलचल*... क्रोध के पेपर में पास मैं शान्त स्वरूप आत्मा... और अब बापदादा के एकदम करीब... बिल्कुल करीब... मैं बापदादा के सबसे करीब की आत्मा... भरे जा रही हूँ स्वयं को उनके स्नेह से... स्नेह सागर में समाती हुई... ॐ शान्ति...

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔